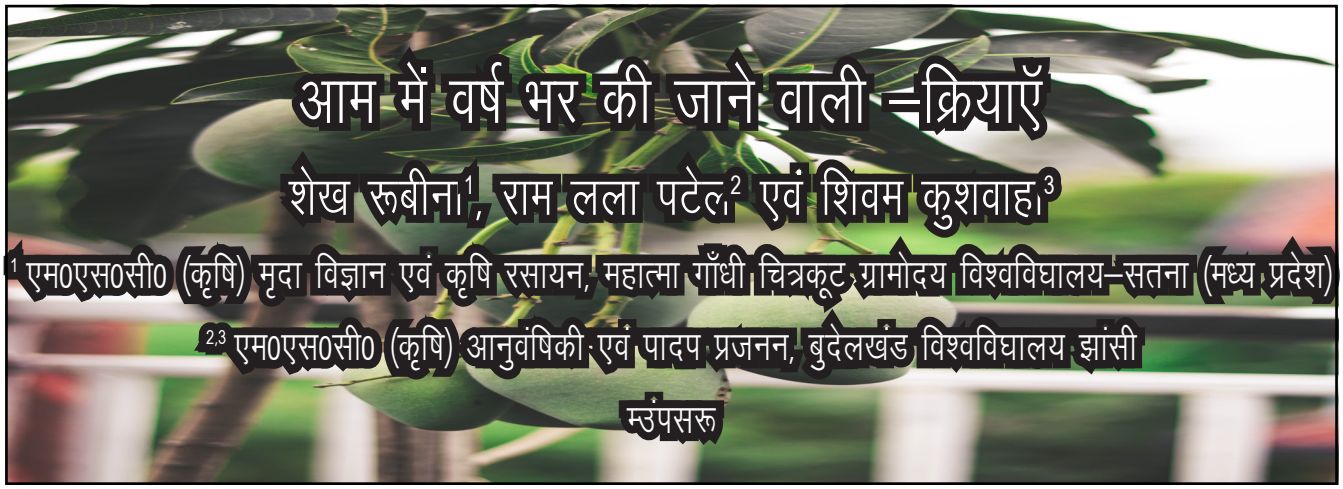

आम में वर्ष भर की जाने वाली –क्रियाएँ

शेख रूबीन[1], राम लला पटेल[2] एवं शिवम कुशवाह[3]

[1]एम0एस0सी0 (कृषि) मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविघालय–सतना (मध्य प्रदेश)

[2,3]एम0एस0सी0 (कृषि) आनुवंषिकी एवं पादप प्रजनन, बुदेलखंड विश्वविघालय झांसी

म्ंपसरू

आम को भारत में कई वर्षों से उगाया जा रहा है। इसका उल्लेख भी कई संस्कृत साहित्य के रूप में किया जाता है। आम उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। पूरे विश्व के उत्पादन का 50 प्रतिशत भारत में उगाया जाता है।

आम को लगाने से लाभ :–

1. आम की छाल का उपयोग डायरिया रोग के इलाज में भी किया जाता है।
2. आम में मौजूद अलग एंटीऑक्सीडेंट ल्यूकोमिया, कोलोन, प्रोस्टेट, कोलेसट्रल को कम करते है।
3. मधुमेह में भी उपयोगी है।
4. आम के फल में विटामिन–ए पाया जाता है, जो रतौंधी रोग से बचाता है।

मृदा:–

आम को विभिन्न प्रकार की मिट्टी पर उगाया जा सकता है। 7.8 से अधिक पी–एच वाली मृदा में आम का उत्पादन अच्छा नहीं होता है। 6.5से7.5 के बीच–पी एच वाली जलोढ़ मृदा , आम के उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

जलवायु:–

आम का उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों में भी अच्छा उत्पादन होता है। फूल आने के समय अगर बारिश और अचानक तेज ठंड पड़ने लगती है, तो यह हानिकारक हो जाता है। आम की फसल के लिए सबसे उपयुक्त ता. पमान 22.27 डिग्री से0 है। फलों के आकार और गुणवत्ता में सुधार के लिए फलों की परिप. क्वता पर बारिश लाभदायक साबित होती है।

प्रजातियाँ :– अलफांसो, रत्नागिरि, दशहरी, लंगड़ा, चौसा, तोतापरी, नीलम, आम्रपाली, फजली, मल्लिका आदि प्रजातियाँ भारत में उगाई जाती है। अलफांसो का भारत से निर्यात भी किया जाता है,आम की बीज रहित किस्म सिंन्धु है।

आम में वर्ष भी की जाने वाली क्रियाएं :–

आम में अगर वर्ष भर सभी कृषि–क्रियाएं सही तरीके से की जाए तो आम का उत्पादन और तेजी से बढ़ेगा।

रोपण तकनीक :–

आम के पौधों को मानसून जून–जुलाई की शुरूआत में लगाना चाहिए। भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में रोपण वर्षा ऋतु के अंत में करना चाहिए। दीमक के नुकसान से बचने के लिए 1 मी0 ग 1 मी0 ग 1 मी0 के गड्ढ़े को खेदना चाहिए।

रोपण की दूरी मिट्टी की गहराई और लगाए गए किस्म पर निर्भर करती है। जहां सिंचाई पर आम की खेती निर्भर करती है, वहॉं पर फरवरी – मार्च में पौधों को लगाना चाहिए।

कटाई–छॉंटाई :–

आम के पेड़ों को एक निश्चित आकार देने के लिए उनकी कटाई–छाँटाई आवश्यक है।

आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करना :–

उर्वरकों को दो भागों में विभाजित कर लेते हैं, आधी मात्रा को जून – जुलाई में फलों की कटाई के तुरंत बाद और दूसरी मात्रा को जून – जुलाई में फलों की कटज्ञई के तुरंत बाद नये और पुराने पेड़ों में देते है।

फूल की अवस्था के पहले रे. तीली मिट्टी में 3 प्रतिशत यूरिया की फोलिअर आवेदन की सिफारिश आम की खेती के लिए अच्छी होती है।

पौधों की आयु (वर्ष में)	उर्वरक की मात्रा
1.	100 ग्राम नत्रजन, 50 ग्राम फास्फोरस, 100 ग्राम पोटाश
10	1 किलो ग्राम नत्रजन, 500 ग्राम फास्फोरस, 1 किलो ग्राम पोटाश
11	उपरोक्त के रूप में

सिंचाई करना :–

नये पौधों की उचित स्थापना के लिये पानी दिया जाता है। बड़े पौधों को उपज में सुधार के लिए फल आने से परिपक्वता तक 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करना फायदेमंद होता है। हालॉकि फूल आने से पहले 2–3 महीने पहले सिंचाई की सलाह नहीं दी जाती है, क्योकि इससे फूलों की कीमत पर वानस्पतिक विकास को बढ़ावा मिलता है। बेहतर गुणवत्ता के लिए परिपक्वता से 20–30 दिन पहले सिंचाई बंद कर देनी चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो बूंद–बूंद प्रणाली से सिचाई की जानी चाहिए। ड्रिप सिंचाई से न केवल पानी

का संरक्षण होता है, बल्कि पानी के उपयोग की क्षमता भी बढ़ती है।

फलों को गिरने से कैसे बचाएं :–

फलों को गिरने से बचाने के लिये 1 प्रतिशत (10ग्राम/ली.पानी) पोटेशियम नाइट्रेट से छिडकाव करना चाहियें। फूलों की अवस्था में 20पी.पी.एम. एन ए ए (20मि.ग्रा./ली.पानी) से 15 दिन के अन्तराल में छिडकाव करना चाहिए।

फलों के विकास के समय अत्यधिक पानी फल गिरने के लियें जिम्मेदार माना जाता है।

नये पौधो की देखभाल :–

एक या दो महीने के लिए 4–7 दिनों के अंतराल पर हल्की सिचाई करें। तेज वेग वाली हवाओं के कारण ग्राफटस को क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए लकडी के टुकडो के निचले हिस्से को कोयले में डुबोया जाता है, ताकि सफेद चींटियो के हमले की जाँच की जा सके।

ठंड मे सुरक्षा :–

नये आम के पौधे कम तापमान और कोहरा के लिए अतिसंवेदनशील होते है। सर्दियों के महीनो के दौरान क्षेत्र की स्थिति में मिटटी की नमी बनायें रखने के लिए सिचाई करें।

बागो के तापमान को बनाए रखने के लिए बागो में कुछ स्थानों पर सूखी घास/खरपतवार को जला देना चाहिए आम के वृक्षारोपण को कुहरा से बचाने के इन सभी उपायों को एक साथ किया जाना चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु मे सुरक्षा :–

नये पौधो को लू से बचाने के लिए कई कृषि क्रियाए करते है। अरहर के पौधो को आम के चारो ओर लगा देते है। अप्रैल महीने में पौधो के तना को सफेद कागज व सफेद रंग पुताई करनी चाहिए।

फल तुड़ाई :–

पुष्प अवस्था के 3–4 महीने बाद फल का रंग हरा से हल्का हरा हो जाता है। जिससे परिपक्वता का पता चलता है।

भारत में ज्यादातर आम की तुड़ाई मार्च से मई महीने के बीच की जाती है। 2–3 टन/एकड उपज प्राप्त होती है, यह पौधे की आयु पर भी निर्भर करती है।

ग्रेडिग और पैकेजिंग :–

तुडाई के बाद फलों को नीचे छाया मे रखा जाता है। बक्से या टोकरी में रखने से पहले ग्रेडिंग की जाती है। फलों को वजन ग्रेड ए 100–200 ग्राम बी 200–350 ग्राम, सी 351–550 ग्राम, और डी 551–600 ग्राम, के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। विभिन्न ग्रेड लकड़ी के बक्से या टोकरी में पैक किये जाते है।

एक टोकरी, 50–100 फल हो सकते है। पैंकिग के लिये पुआल का उपयोग किया जाता है। दूर के विपणन के लिए लकडी के बक्से का उपयोग किया जाता है। एक डिब्बे में 100 किलो फल हो सकते है। फलों की पर्त को दुसरी पर्त से बचाने के लिए कचरा और कागज का उपयोग किया जाता है। छिद्रितकार्ड बोर्ड का भी उपयोग किया जा रहा है।

संग्रहण :– तुडाई के बाद के नुक्सान को कम करना आय बढाने का एक महत्वपूर्ण कारक है। हरे लेकिन परिपक्व आम 10–15 डिग्री.सेल्सियस के इष्ठतम तापमान पर ठंडे भण्डारण में संग्रहीत किये जाते है। यदि आम को नियंत्रित वातावरण में संग्रहीत किया जाता है, तो ऑक्सीजन 3.7 प्रतिशत और कार्बनड. ई ऑक्साइड 5–8 प्रतिशत होना चाहिए।

शारीरिक विकार :–

1. वैकल्पिक असर :– दक्षिण भारतीय खेती इससे बहुत प्रभावित होती है। लेकिन लगडा, चौसा,रामपुर गोला उत्तर भारत में वैकल्पिक वाहक है। दशहरी और आम्रपाली नियमित रूप से वाहक है। इसलिए नियमित असर वाली खेती करने की सलाह दी जाती है। पेड के टहनियों में पैक्लोबुटाजोल का 5 ग्राम/वृक्ष का उपयोग वैकल्पिक असर को कम करता है।

2. कुरूपता:– यह आम की खेती को प्रभावित करने वाले विकारो में से एक है। एन.ए.ए. के 100 पी.पी.एम. को दो बार स्प्रे करें अर्थात अक्टूबर के पहले सप्ताह में और फिर नवम्बर के पहले सप्ताह में।

3. स्पंजी ऊतक:– यह एक प्रकार का शारीरिक विकार है। जो आमतौर पर अल्फांसो किस्म को प्रभावित करता है। प्रभावित फल खराब गंध देते है। और इसका सेवन नही किया जा सकता। खेत के आस–पास मिट्टी को नमी बनाए रखने से इस विकार से बचा जा सकता है।

कीट प्रबंधन :–

1. मैंगों मिली बग:– यह जनवरी से अप्रैल तक फूलों और फलने की अवस्था के दौरान पौधो पर हमला करता है। इसके नियंत्रण के लिए कई विधियाँ अपनानी चाहिए–

- खरपतवारों को खास तौर पर पार्थेनियम (कांग्रेस घास) नष्ट कर दें।
- टॉक्सोफेन 225 ग्राम/वृक्ष मृदा पर उपयोग करना चाहिए।

2. स्टेम बोरर :– कभी–कभी यह एक गंभीर कीट बन जाता है, और पेड़ के तनों पर हमला करता है। एक कठोर तार के साथ सुरंग को साफ करें, और मिट्टी के तेल में भीगे कॉटन को सुरंग में रखे।

3. मैंगों फल मक्खी :– यह दुनिया के सभी आम उगाने वाले क्षेत्रों का सबसे गंभीर कीट है।

इसके प्रबंध के लिए कई तरीके अपनाने चाहिए–

- पुष्प क्रम से पहले खेत की जुताई करें
- मई से शुरू होने वाले 20 दिनों के अंतराल पर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी./ दो मिली./ली. पानी के तीन स्प्रे करें।
- अंडो को मारने और कीटनाशक अवशेषों को हटाने के लिए 1 घण्टे के लिए 5 प्रतिशत सोडियम क्लोराइड के घोल में फलों को डुबोएं।